मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से अन्य राज्यों में पदस्थापित राजस्थानी मूल के अखिल भारतीय एवं विभिन्न केन्द्रीय सेवा अधिकारियों को आगामी प्रवासी राजस्थानी दिवस में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।

राजस्थानी मूल के अधिकारियों की राज्य को निवेश हब बनाने में अहम् भूमिका- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने विभिन्न राज्यों में पद स्थापित अधिकारियों को प्रवासी राजस्थानी दिवस के लिए आमंत्रित किया

जयपुर, 4 दिसम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार आगामी 10 दिसम्बर को प्रवासी राजस्थानी दिवस का भव्य आयोजन करने जा रही है, जिसके लिए हर क्षेत्र से भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। शर्मा ने विभिन्न राज्यों में पदस्थापित राजस्थानी मूल के अखिल भारतीय एवं विभिन्न केन्द्रीय सेवा अधिकारियों को आगामी प्रवासी राजस्थानी दिवस में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान को निवेश का हब बनाने में इनकी अहम भूमिका है। इन अधिकारियों के अनुभव, सुझाव और संपर्क राज्य की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

■ मुख्यमंत्री भजनलाल ने इन अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस में कहा कि ये अधिकारी राज्य सरकार और प्रवासी राजस्थानियों के बीच एक मजबूत सेतु हैं।

शर्मा गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से विभिन्न राज्यों में पदस्थापित राजस्थानी मूल के अखिल भारतीय एवं विभिन्न केन्द्रीय सेवा अधिकारियों के साथ प्रवासी राजस्थानी दिवस के संबंध में आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न राज्यों में पदस्थापित राजस्थानी मूल के अधिकारियों का अपनी कर्मभूमि के साथ ही, जन्मभूमि से भी भावनात्मक जुड़ाव रहता है। इन अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में विभिन्न नवाचार किए हैं। उन्होंने कहा कि ये अधिकारी राज्य सरकार और प्रवासी राजस्थानियों के बीच एक मजबूत सेतु हैं। उन्होंने इन अधिकारियों से अपील करते हुए कहा कि वे प्रवासी राजस्थानी, उद्यिमयों और निवेशकों को राजस्थान में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करें।

बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र सरकार में पदस्थापित विभिन्न अधिकारियों एवं केन्द्रीय सेवा अधिकारियों ने अपने सुझाव दिए। बैठक में मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास सहित, विभिन्न अधिकारीगण उपस्थित थे।

दस सालों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

होती हैं, अधिक समय तक पानी के नीचे रह सकती हैं और इनमें आवाज नहीं होती, जिससे इन्हें ट्रैक करना मुश्किल हो जाता है, खासकर भारतीय और प्रशांत महासागरों में गश्त करते समय। एनटीआई ने बताया वर्तमान में भारत के पास 17 डीजल-चालित पनडुब्बियाँ हैं। भारत द्वारा रणनीतिक निरोध के लिए इस्तेमाल होने वाली न्यूक्लियर पावर्ड पनडुब्बियाँ स्वदेशी हैं और सबमरीन लाँच बैलिस्टिक मिसाइल को ले जाने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। भारत न्यूक्लियर पावर्ड अटैक पनडुब्बियाँ बनाने की तैयारी भी कर रहा है, जो दुश्मन की पनडुब्बियों और सतह पर चलने वाले जहाजों को खत्म करने के लिए डिज़ाइन की जाएंगी। सूत्रों ने बताया, लीज़ शर्तों के तहत, रूस की हमलावर पनडुब्बी का युद्ध में उपयोग नहीं किया जा सकेगा। यह पनडुब्बी नाविकों को प्रशिक्षित करने और न्यूक्लियर-बोट संचालन को सुधारने में भारत की मदद करेगी, क्योंकि भारत अपनी स्वयं की पनडुब्बियाँ बना रहा है।

उन्होंने बताया, रूस से ली गई यह पनडुब्बी भारतीय नौसेना के पास 10 साल तक रहेगी। अंतिम रूसी पनडुब्बी, जो 10 वर्षों के लिए ली गई थी, 2021 में लौटाई गई थी, सूत्रों ने कहा। लीज़ समझौते में इसका रख-रखाव भी शामिल होगा। चूंकि भारतीय महासागर क्षेत्र पर अधिक ध्यान आकर्षित हो रहा है, इसलिए ऐसी पनडुब्बियों में रुचि बढ़ी है। ऑस्ट्रेलिया, यूके और यूएस मिलकर एयूकेयूएस सुरक्षा साझेदारी के तहत ऐसी पनडुब्बियाँ बनाने का प्रयास कर रहे हैं। अब तक, केवल कुछ देशों- अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन और रूस-के पास न्यूक्लियर पावर्ड पनडुब्बियाँ तैनात और संचालित करने की तकनीक है। दक्षिण कोरिया भी अमेरिकी सहयोग से न्यूक्लियर पावर्ड पनडुब्बियाँ बनाने पर काम कर रहा है।

भारत ने रूस के साथ अपनी दीर्घकालिक साझेदारी बनाए रखी है, जबकि वह अमेरिका के साथ गहरे संबंध स्थापित करने की दिशा में भी कदम बढ़ा रहा है। उसने रूस पर हथियारों संबंधी अपनी निर्भरता को कम किया है और अब अमेरिका और यूरोपीय देशों से अधिक हथियार खरीदने लगा है। फिर भी, पुतिन से न्यूक्लियर पनडुब्बियों के लिए रूस पर निर्भर रहने का मोदी का निर्णय यह दर्शाता है कि भारत महत्वपूर्ण प्लेटफार्मों पर रूस के साथ सहज है, भले ही ट्रंप द्वारा आलोचना की जा रही हो।

नकली प्रमाण पत्र से इंटर्नशिप करने वाले तीन फ़र्ज़ी डॉक्टर गिरफ्तार

एसओजी फ़र्ज़ी एफएमजीई प्रमाण पत्र देने वाले नेटवर्क की तह तक पहुँचने की तैयारी में

जयपुर, 4 दिसम्बर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने तीन ऐसे फर्जी डॉक्टरों को गिरफ्तार किया है, जिन्होंने विदेशी मेडिकल डिग्री के बाद भारत में आवश्यक मेडिकल ग्रेजुएट एग्ज़ामिनेशन (एफएमजीई) परीक्षा पास न कर पाने पर, फर्जी प्रमाणपत्र बनवाकर सरकारी मेडिकल कॉलेजों में इंटर्नशिप की थी। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एसओजी विशाल बंसल ने बताया कि विदेशी मेडिकल डिग्री के बाद भारत में एफएमजीई परीक्षा पास करना जरुरी होता है, पर ये तीनों डॉक्टर यह परीक्षा पास नहीं कर पाए तो उन्होंने फर्जी प्रमाणपत्र बनवाया और सरकारी मेडिकल कॉलेजों में इंटर्नशिप की। गिरफ्तार किये गये फर्जी डॉक्टर पीयूष कुमार त्रिवेदी, शुभम गुर्जर और देवेन्द्र सिंह गुर्जर दौसा जिले के रहने वाले हैं।

एडीजी बंसल ने बताया कि एसओजी को सूचना मिली थी कि डॉ. पीयूष कुमार त्रिवेदी निवासी दौसा ने एफएमजीई परीक्षा में बार-बार असफल होने के बावजूद एक आपराधिक गिरोह की मदद से फर्जी एफएमजीई सर्टिफिकेट प्राप्त करके एनएमसी (एनएमसी) से इंटर्नशिप की अनुमति प्राप्त की और उसे राजकीय मेडिकल कॉलेज, करौली में इंटर्नशिप के लिए आवंटन भी मिल गया था। जांच में आरोप सही पाए जाने के बाद एसओजी ने प्रकरण दर्ज कर गहन जांच शुरू की।

■ विदेशी मैडिकल डिग्री वालों को भारत में मैडिकल ग्रैजुएट एग्ज़ामिनेशन परीक्षा पास करना अनिवार्य होता है। उसके बाद ही वह इंटर्नशिप व प्रैक्टिस कर सकता है।

जांच में सामने आया कि आरोपी डॉ. पीयूष ने जॉर्जिया से एमबीबीएस की डिग्री ली थी। लेकिन भारत में प्रैक्टिस करने के लिए अनिवार्य एफएमजीई परीक्षा में वह 2022, 2023 और 2024 में लगातार तीन बार असफल रहा।

बार-बार फेल होने पर उसने अपने परिचित डॉ. देवेन्द्र सिंह गुर्जर से संपर्क किया। देवेन्द्र ने अपने साथी डॉ. शुभम गुर्जर एवं अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर पीयूष को 16 लाख के बदले फर्जी एफएमजीई सर्टिफिकेट और एनएमसी रजिस्ट्रेशन दिलवाया।

एसओजी की गहन जांच में यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि यह गोरखधंधा केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं था। डॉ. शुभम गुर्जर ने खुद भी फर्जी एफएमजीई सर्टिफिकेट के आधार पर राजीव गांधी अस्पताल अलवर में और डॉ. देवेन्द्र सिंह गुर्जर ने भी इसी गिरोह के माध्यम से नकली प्रमाणपत्र प्राप्त किया और राजकीय मेडिकल कॉलेज, दौसा में अपनी इंटर्नशिप पूर्ण की।

एसओजी ने गिरफ्तार तीनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर पुलिस अभिरक्षा प्राप्त की।

विदेश यात्रा के दौरान पुतिन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तैयार किए गए सभी व्यंजनों को सबसे पहले उनके बॉडीगार्ड्स चखते हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यदि किसी भोजन में जहर डाला गया हो, तो वह पहले गार्ड्स को प्रभावित करेगा।

एक रसोइए ने फिल्म "अवर सर्विस" में कहा, जहाँ भी नेता (पुतिन) होते हैं, हम वहां होते हैं। यानी, चाहे यह एक व्यापार यात्रा हो, छुट्टी हो या एक निजी समारोह, हम हमेशा वहां होते हैं। जब कोई बड़ा कार्यक्रम होता है, तो हम भी उस पर निगरानी रखते हैं।" "अवर सर्विस" में पुतिन की प्राथमिकताओं को भी उजागर किया गया है। वे फास्ट फूड से बचते हैं और रात के समय मीट कम खाते हैं। उन्हें बैंगन के व्यंजन, ओलिवियर सलाद और गेम लीवर (जंगली जानवरों की कलेजी) पसंद है, और सरकारी कार्यक्रमों में वे रोज़हिप, या अदरक की चाय पीते हैं और शराब तो यदा-कदा ही लेते हैं। विदेश में, पुतिन बुलेटप्रूफ ऑरस सेनाट लिमोज़ीन में यात्रा करते हैं, जो ग्रेनेड-रोधी है, तथा आपातकालीन ऑक्सीजन, आग बुझाने की प्रणाली और उन्नत संचार सुविधाओं के साथ डिज़ाइन की गई है। उनके "इल्युसिन आईएल-96-300पीयू" विमान, जिसे "फ्लाइंग प्लूटॉन" कहा जाता है, में सुरक्षित संचार प्रणालियाँ, एक जिम, चिकित्सा केन्द्र, कॉन्फ्रेन्स रूम और परमाणु हमलों को प्राधिकृत (ऑथराइज़) करने के उपकरण होते हैं। पुतिन की यात्रा की एक और असामान्य विशेषता है। रिपोर्टों के अनुसार, उनके शारीरिक मल-मूत्र को एकत्रित किया जाता है, सील किया जाता है और रूस वापस भेजा जाता है। यह उपाय इसलिए किया जाता है, ताकि विदेशी खुफिया एजेंसियां उनके स्वास्थ्य की स्थिति का पता न लगा पाएं।

बॉडीगार्ड्स मलमूत्र सील कर सूटकेस में रखते है। यह सूटकेस मॉस्को वापस भेजा जाता है। इस तौर-तरीके को पुतिन की 2017 की फ्रांस यात्रा, 2019 की सऊदी अरब यात्रा और हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित अलास्का शिखर सम्मेलन के दौरान भी देखा गया था। पूर्व बीबीसी पत्रकार, फरीदा रुस्तमोवा ने भी इन सुरक्षा उपायों की पुष्टि की और बताया कि एक ऐसी विदेश यात्रा के दौरान, पुतिन ने एक निजी बाथरूम का इस्तेमाल किया, जिसमें एक पोर्टेबल टॉयलेट भी था। उन्होंने यह भी कहा कि एक स्रोत के अनुसार, राष्ट्रपति ने यह तौर-तरीका 1999 में अपने नेतृत्व की शुरुआत से ही अपनाया है।

पाकिस्तान आशंकित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के करीब जाता है। लेकिन ट्रम्प प्रशासन, जो लेन-देन आधारित विदेश नीति पर चलता है, द्वारा भारत को खुलकर चुनौती देने की संभावना कम है। इसके बजाय अमेरिका अपनी असहजता को प्राइवेट तौर पर संभालना पसंद करता है, यह मानते हुए कि भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता जारी रखेगा, खासतौर पर तब, जब रूसी कच्चा तेल, खाद और रक्षा प्रणालियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं।

साथ ही, वॉशिंगटन इस जोखिम को लेकर भी चौकस है कि रूस, टैक्नॉलजी कंट्रोल को बायपास करने के लिए भारत का इस्तेमाल कर सकता है। यह एक ऐसा मुद्दा है जो भविष्य में भारत-अमेरिका संबंधों में एक छिपा हुआ तनाव बना रह सकता है। यूरोप की प्रतिक्रिया अधिक संयमित है, लेकिन यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में।

यूरोपीय देशों की बड़ी राजधानियाँ मॉस्को के साथ किसी भी बड़े संपर्क को रूसी आक्रामकता के नज़रिए से देखती हैं, लेकिन वे भारत की ग्लोबल सप्लाई चेन और निवेश में अहम भूमिका को भी समझती हैं। इसलिए यूरोप एक व्यावहारिक रुख अपनाता है: न वह पुतिन की इस पहुँच का स्वागत करता है, न ही खुलकर भारत की आलोचना। असल में चिंता की भावना आर्थिक वास्तविकता से जुड़ी हुई है।

चीन भी इस यात्रा को ध्यान से देख रहा है, हालांकि ज्यादा बारीकी से। एक तरफ, बीजिंग मॉस्को और नई दिल्ली के बीच मजबूत संबंधों को अच्छा मानता है, क्योंकि इससे रूस पूरी तरह चीन पर निर्भर होने से बचता है।

दूसरी तरफ, रूस द्वारा भारत को उन्नत एयर डिफेंस या स्टैल्थ सिस्टम उपलब्ध कराने की संभावना हिमालयी सीमा पर मिलिटरी मुश्किलें पैदा करता है। इसके बावजूद, चीन को भरोसा है कि रूस के साथ उसकी गहरी रणनीतिक नज़दीकियाँ भारत के संभावित सैन्य फायदे के बावजूद कायम रहेंगी।

इसके विपरीत, मिडिल ईस्ट इस यात्रा को स्ट्रैटेजिक नज़रिए से नहीं बल्कि कॉमर्शियल दृष्टि से देखता है। खाड़ी देशों के लिए भारत एक बड़ा ऊर्जा बाज़ार है, कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण श्रम स्रोत हैं और दीर्घकालिक निवेश भागीदार है। इसलिए भारत-रूस की निकटता से उनकी अपनी भारत-नीतियाँ ज़्यादा प्रभावित नहीं होतीं। अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका में इस यात्रा को सकारात्मक रूप से देखा जा रहा है। भारत की यह क्षमता, कि वह सभी बड़े शक्ति समूहों के साथ मजबूत संबंध बनाए रख सकता है, बहुध्रुवीयता (मल्टीपोलरिटी) और रणनीतिक स्वायत्तता (स्ट्रैटेजिक ऑटोनोमी) की आकर्षण शक्ति को बढ़ाती है।

लेकिन इन अलग-अलग वैश्विक प्रतिक्रियाओं के बीच, पाकिस्तान की धारणा सबसे स्पष्ट रूप से उभरती है। इस्लामाबाद के लिए पुतिन की भारत यात्रा क्षेत्रीय सैन्य और कूटनीतिक समीकरण में एक तेज बदलाव का प्रतीक है, ऐसा बदलाव जो भारत की स्थिति को और मजबूत करता है और पाकिस्तान के रणनीतिक अकेलेपन की भावना को और गहरा।

एसआई ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महेन्द्र कुमार चौधरी ने लिखित परीक्षा में हिन्दी में 200 में से 137.21 अंक और सामान्य ज्ञान विषय में 200 में से 158.59 अंक हासिल किए और इसी से उसकी पोल खुली। संयुक्त मेरिट में 474 वां स्थान आने के बावजूद, ओबीसी कैटेगरी में उसका अंतिम चयन नहीं हो पाया था।

एसओजी ने आरोपी महेन्द्र कुमार चौधरी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया और 8 दिसंबर तक पुलिस अभिरक्षा रिमांड प्राप्त किया है। प्रारंभिक पूछताछ में यह भी सामने आया है कि महेन्द्र कुमार चौधरी मुख्य सरगना विनोद कुमार जाट के साथ अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक प्रकरणों में भी शामिल था।

इस गिरफ्तारी के साथ ही उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा-2021 पेपर लीक प्रकरण में गिरफ्तार होने वाले आरोपियों की कुल संख्या 133 हो गई है।

'विदेशी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आने वाले विदेशी राष्ट्राध्यक्षों से नहीं मिलना चाहिए।

मीडिया पुतिन की यात्रा को लेकर जरुरत से ज्यादा उत्साहित दिख रहा है, उसका अन्तर्निहित संदेश यह है कि यदि एक अच्छे मित्र (ट्रंप) ने मोदी पर हमला किया है, तो दूसरा अच्छा मित्र पुतिन, मोदी के साथ खड़ा है।

भारत में आज से लाँच ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और रूस के बीच संबंधों को मजबूत करना तथा बहुध्रुवीय दुनिया में दोनों देशों के बढ़ते प्रभाव को आगे बढ़ाना।" यह भी संभव है कि यूक्रेन युद्ध के बाद उनके इस प्रथम भारत दौरे पर, रुस के राष्ट्रपति का एक इन्टरव्यू भी प्रसारित किया जाये। "आरटी इंडिया" की टैगलाइन है: "न एंटी-वेस्टर्न... न सिर्फ वेस्टर्न।"

दिलचस्प बात यह है कि भारत में इस रूसी टीवी नेटवर्क का शुभारंभ ऐसे समय हो रहा है, जब यूरोपीय संघ ने आरटी पर प्रतिबंध लगा रखा है। यह प्रतिबन्ध 2022 में यूक्रेन पर रूस के हमले के तुरंत बाद लगा दिया गया था।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि चूँकि आरटी पहले से ही भारत में अन्य नेटवर्क्स के माध्यम से प्रसारित हो रहा है और "प्रसार भारती" के साथ उसका समझौता भी है, इसलिए यहाँ काम करने के लिए उसे अलग से लाइसेंस की जरूरत नहीं है। लेकिन उसे अपलिंकिंग और डाउनलिंकिंग की अनुमति लेनी होगी।

2005 में शुरू हुए आरटी इन्टरनेशनल के इस समय 16 देशों में 20 से अधिक ब्यूरो हैं और इस समय यह भारत में भी उपलब्ध है, जहाँ इसे 18 प्रमुख भारतीय ऑपरेटरों द्वारा पैकेज के रूप में पेश किया जाता है। पिछले साल जुलाई में आरटी ने प्रसार भारती के तहत संचालित दूरदर्शन के साथ समाचार- साझेदारी समझौता भी किया था।

आरटी इंडिया के शुभारंभ पर बातचीत इस साल की शुरुआत में शुरू हुई थी, जब विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने मॉस्को में रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री डेनिस मांतुरोव से मुलाकात की थी। तब मांतुरोव के कार्यालय द्वारा जारी एक सरकारी बयान में कहा गया था कि आरटी इंडिया चैनल का शुभारंभ वर्ष के अंत तक नई दिल्ली में किया जाएगा।

अमेरिका को अंगूठा दिखाकर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बेहद निर्भर है। लेकिन रूस पश्चिमी प्रतिबंधों और तकनीकी सप्लाई रुकने के कारण भारत की कई महत्वपूर्ण रक्षा मांगों को पूरा करने में नाकाम रहा है।

इस गहरी रक्षा निर्भरता के बीच भारत अच्छी तरह जानता है कि रूस का चीन के साथ रिश्ता बेहद करीबी है। पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग "सीमाहीन दोस्ती" की घोषणा कर चुके हैं, जबकि चीन लगातार भारत को हिमालयी सीमाओं पर परेशान कर रहा है। इन दिनों चीन ने अपनी विशाल सैन्य शक्ति और रक्षा क्षमताओं का लगातार प्रदर्शन किया है, जिसका संज्ञान अमेरिका तक ने गंभीरता से लिया है। भारत की सुरक्षा अभी भी काफी हद तक रूसी आपूर्ति पर ही टिकी हुई है।

इन हालात की तुलना में भारत रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में बेहद पीछे है। चीन की तरह डिफैंस सैक्टर में भारत के पास उत्पादन क्षमता और तकनीकी नवाचार नहीं हैं।

ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि यदि हिमालयी सीमा या हिंद महासागर क्षेत्र में भारत-चीन के बीच गंभीर तनाव बढ़ता है तो क्या होगा? चीन ने हाल ही में हिंद महासागर में भी अपनी दावेदारी जतानी शुरू कर दी है, जिसे भारत अपना बताता है। ऐसे में क्या रूस भारत का साथ देगा? यह बड़ा सवाल बना हुआ है।

भारत जब रुस से अपनी दोस्ती बढ़ा रहा है, उस दौरान पश्चिमी यूरोप काफी नाराज़ दिख रहा है। पश्चिमी देश बार-बार पूछ रहे हैं कि भारत कब तक दो अलग-अलग खेमों, एक तरफ रुस और उसके कुछ मित्र देशों, और दूसरी तरफ पूरे पश्चिमी गठबंधन के बीच संतुलन बनाए रख पाएगा।

हालांकि एक क्षेत्र ऐसा है, जो भारत और रूस दोनों के लिए साफ तौर पर फायदे का सौदा है। वह है, दोनों देशों के बीच आर्थिक रिश्ते।

अभी तक भारत-रूस के आर्थिक रिश्ते बहुत कमजोर रहे थे। रूस से कच्चे तेल की खरीद पहले बेहद कम थी, अधिकतर लॉजिस्टिक दिक्कतों के कारण। लेकिन जब रूस ने रियायती कीमतों पर तेल देना शुरू किया, तो भारत की खरीद तेजी से बढ़ी।

रुसी तेल खरीदने पर अमेरिका द्वारा प्रतिबंधों की धमकियों के बावजूद, भारत ने कुछ समय तक यह सस्ता तेल खरीदना जारी रखा। लेकिन अब हालात बदल रहे हैं और भारतीय कंपनियाँ धीरे-धीरे रूसी रियायती तेल खरीदने की अपनी पसंद बदल रही हैं।

भारत द्वारा बड़े रक्षा सौदों और तेल की भारी खरीद ने आपसी व्यापार को बढ़ाया है, लेकिन इससे गहरा असंतुलन भी पैदा हुआ है। रूस से भारत का व्यापार घाटा (ट्रेड डैफिसिट) काफी बढ़ गया है, जिसे अब संतुलित करने की कोशिश की जा रही है।

रूस द्वारा भारत से खरीदारी लगभग नगण्य ही रही है। भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स, उपभोक्ता सामान और वे पारंपरिक उत्पाद, जो सोवियत दौर में खूब बिकते थे, अब रूसी बाजार में लगभग गायब हैं। इसलिए भारत का जोर अब व्यापक और विविध व्यापार संबंध बनाने पर है।

दोनों देशों के बीच दिखाई जा रही दोस्ती से आगे बढ़कर उम्मीद है कि यह यात्रा भारत-रूस संबंधों को अधिक संतुलित और परिपक्व दिशा देने के लिए ठोस आधार तैयार करेगी।

पूर्व राज्यपाल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बिड़ला सहित विभिन्न नेताओं ने स्वराज के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

स्वराज का स्वास्थ्य पिछले कुछ दिनों से खराब चल रहा था और उन्हें आज सुबह यहां अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया था, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली।

उनकी पत्नी एवं पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वाराज का अगस्त 2019 में निधन हो गया था। उन्होंने 1975 में सुषमा स्वराज से शादी की थी। उनकी पुत्री बांसुरी स्वराज भाजपा की नेता एवं नयी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोनः2386031, 2386032, फैक्सः0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः2200660, फैक्सः 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, 2418945, फैक्सः 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोनः 2627612, फैक्सः0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोनः 226422, 226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोनः 256906, 256907, फैक्सः01562-256908